



साहित्यिक हिन्दी के रूप में खड़ी बोली का उद्भव एवं विकास

सुनीता रानी (एच.ई.एस.-II) लैक्चरर हिन्दी (स्कूल कैंडर)
मोरनी हिल्ज, पंचकूला (हरियाणा)

खड़ी बोली हरियाणा, दिल्ली एवं उत्तर प्रदेश के क्षेत्र में बोली जाती है। खड़ी बोली गद्य की सर्वप्रथम रचना अकबर के दरबारी कवि गंग की 'चन्द छन्द बरनन की महिमा' मानी जाती है। तदुपरान्त रामप्रसाद निरंजनी ने 'भाषा योग विशिष्ट' नामक रचना खड़ी बोली गद्य में लिखी।

ISSN : 2278-6848



9 772278 684800
© International Journal for
Research Publication and Seminar

खड़ी बोली गद्य के विकास में निम्न चार लेखकों का महत्वपूर्ण योगदान है।

- | | | |
|---------------------|---|---------------------|
| 1. मुंशी सदा सुखलाल | — | सुखसागर |
| 2. इशां अल्लाखां | — | रानी केतकी की कहानी |
| 3. लल्लूलाल | — | प्रेम सागर |
| 4. सदल मिश्र | — | नासिकेतोपाख्यान |

सन् 1850 ई. में फोटे विलियम कॉलेज, कलकता की स्थापना हुई जिसमें हिन्दी और उर्दू के अध्यापक के रूप में जान गिलक्राइस्ट की नियुक्ति हुई। लल्लूलाल एवं सदल मिश्र दोनो ही फोर्ट विलियम कॉलेज में थे।

रानी केतकी की कहानी आधुनिक काल में लिखी गई हिन्दी गद्य की पहली मौलिक रचना है, जिसकी भाषा मुहावरेदार, विनोदपूर्ण एवं आनुप्रासिक है।

इसाई धर्म प्रचारकों ने भी हिन्दी गद्य के विकास में योगदान दिया। शिक्षा क्षेत्र में नवीन विषयों पर पुस्तकें उपलब्ध कराने में भी अंग्रेजों एवं इसाई मशीनरियों का योगदान है। हिन्दी गद्य के विकास में राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्दी और राजा लक्ष्मण सिंह का नाम भी उल्लेखनीय है। राजा



शिवप्रसाद के प्रयत्नों से कंपनी सरकार ने संस्कृत कालेज में हिन्दी शिक्षा को स्थान देना स्वीकार किया।

राजा शिवप्रसाद की लिखी मुख्य रचनाएं राजा भोज का सपना, मानव धर्मसार तथा आलसियों का कीड़ा है। श्रद्धाराम फुलेरी (पंजाब) ने संस्कृत का विद्वान होते हुए भी हिन्दी को अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया। इन्होंने 'भाग्यवती' नामक उपन्यास लिखा तथा 'सत्यामृत प्रवाह' नामक धार्मिक पुस्तक की रचना की।

भारतेन्दु जी से पूर्व की दो शैलियां प्रचलित थी—उर्दू—फारसी शब्दों वाली हिन्दी और संस्कृतनिष्ठ विशुद्ध हिन्दी। भारतेन्दु जी को हिन्दी गद्य का जनक माना गया है। भारतेन्दु जी उपरान्त प्रेमचन्द, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी तथा डा० नगेन्द्र जैसे विद्वानों ने हिन्दी गद्य को उसके चरम उत्कर्ष पर पहुंचाया। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा रचित 'चिन्तामणि' हिन्दी गद्य का निकष कही जा सकती है तथा आदर्श हिन्दी का मानदण्ड है।

खड़ी बोली हिन्दी में पद्य रचना को प्रोत्साहित करने का श्रेय आचार्य महावीर प्रसाद को जाता माना गया है। उन्होंने 'सरस्वती' पत्रिका के संपादक के रूप में हिन्दी खड़ी बोली कविता को प्रोत्साहन दिया। मैथिली शरण गुप्त का 'साकेत', अयोध्या सिंह उपाध्याय का 'प्रिय प्रवास' खड़ी बोली हिन्दी में लिखे गये महाकाव्य हैं। खड़ी बोली को काव्य भाषा के रूप में उत्कर्ष पर पहुंचाने का कार्य छायावादी कवियों—प्रसाद, पन्त, निराला, महादेवी वर्मा के अतिरिक्त रामधारी सिंह दिनकर, हरिवंश राय बच्चन, माखनलाल चतुर्वेदी आदि ने किया। 'कामायनी' छायावादी युग का सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य है जिसकी रचना जयशंकर प्रसाद ने की। सुमित्रानन्दन पन्त की कृति पल्लव, महादेवी वर्मा की दीपशिखा एवं निराली की अनामिका भी इस काल की उल्लेखनीय कृतियां हैं।

हिन्दी गद्य की विविध विधाओं—नाटक, एकांकी, कहानी, उपन्यास, लेखाचित्र, जीवनी, संस्करण, आत्मकथा, निबन्ध, आलोचना आदि से संबंधित प्रचुर रचनाएं इस काल में लिखी गईं। इस प्रकार से हिन्दी दिनों दिन समृद्धि के पथ पर अग्रसर है।



काव्य भाषा के रूप में खड़ी बोली का विकास

काव्य भाषा के रूप में हिन्दी के क्रमिक विकास को निम्न प्रकार से वितरित किया गया है।

अमीर खुसरों की खड़ी बोली

खड़ी बोली को काव्य भाषा के रूप में आदि काल में ही 'अमीर खुसरों' ने अपना लिया था। 'अमीर खुसरों' (1255–1324 ई.) की पहेलियां, मुकरियां, दो सखुन, ढकोसले आम जनता में लोकप्रिय हुए। खुसरों की कविता के निम्न उदाहरण प्रस्तुत हैं—

1. एक थाल में मोती से भरा। सबके सिर पर औंधा धरा।।

चारों ओर वह थाली फिरे। मोती उसस एकन गिरे।।

— आकाश

2. गधा क्यों उदासा। पथिक क्यों प्यासा।।

—लोट न था

3. अरथ जो इसका पूछेगा। मुंह देखो तो सूझेगा।।

—दर्पण

द्विवेदी युगीन खड़ी बोली

मध्यकाल में काव्य भाषा के पद पर ब्रजभाषा एवं अवधी का प्रभाव रहा। भारतेन्दु युग में गद्य की भाषा तो खड़ी बोली थी, किन्तु काव्य के रूप में ब्रज भाषा का ही प्रयोग होता था। द्विवेदी युगीन कवियों ने अपनी काव्य रचनाओं में खड़ी बोली का उपयोग कर ब्रज भाषा के महत्व को दरकिनार किया। मैथिली शरण गुप्त द्वारा रचित 'जयद्रथ वध' की प्रसिद्धि ने ब्रजभाषा मोह को मिटा दिया। तत्पश्चात 'भारत-भारती' की लोकप्रियता में खड़ी बोली को काव्य भाषा के रूप में प्रतिष्ठित कर दिया।



मैथिली शरण गुप्त, अयोध्या सिंह उपाध्याय एवं नाथूराम शर्मा ने छन्द वैविध्य की ओर ध्यान देकर संस्कृत के वर्णवृत्ता का प्रयोग कुशलता से किया। श्रीधर पाठक ने कश्मीर सुषमा, देहरादून, भारत गीत आदि रचनाओं को खड़ी बोली में रचा।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'सरस्वती पत्रिका' का सम्पादन 1903 से 1920 ई. तक किया। उन्होंने पत्रिका के माध्यम से खड़ी बोली का भरपूर उपयोग एवं प्रयोग किया। उनकी भाषा का एक उदाहरण—

तुम्हीं अन्नदाता भारत के सचमुच बैलराज महाराज।

बिना तुम्हारे हो जाते हम दाना-दाना को मोहताज।।

—महावीर प्रसाद द्विवेदी

प्रिय प्रवास (1914 ई.) अयोध्या सिंह उपाध्याय का खड़ी बोली में लिखा गया महाकाव्य है। प्रिय प्रवास में उपयुक्त भाषा का उदाहरण—

प्रियपति वह मेरा प्राण प्यारा कहां है।

दुख जलनिधि डूबी का सहारा कहां है।।

लख मुख जिसका मैं आज लौं जी सकी हूं

वह हृदय हमारा नैन तारा कहां है।

—प्रिय प्रवास, हरिऔध

साकेत खड़ी बोली में रचित दूसरा महाकाव्य है। मैथिलीशरण गुप्त जी ने इस महाकाव्य की रचना कर खड़ी बोली को काव्य गरिमा प्रदान की। एक उदाहरण—

सखि नील नमस्सर से उतरा यह हंस अहा! तरता-तरता।

अब तारक मौक्तिक शेष नहीं निकला जिनको चरता-चरता।।

अपने हिमबिन्दु बचे तब भी चलता उनको धरता-धरता।।

गढ़ जाएं न कंटक भूतल के कर डाल रहा डरता-डरता।।



—साकेत, मैथिलीशरण गुप्त

छायावादी काव्य में प्रयुक्त खड़ी बोली

द्विवेदी युग उपरान्त छायावादी काव्य का प्रादुर्भाव हुआ और ब्रज भाषा की कविता समाप्त प्राय हो गई। छायावादी कवियों में प्रसाद, पन्त, निराला और महादेवी वर्मा ने खड़ी बोली को काव्य भाषा के रूप में अपनाया।

जयशंकर प्रसाद ने 'कामायनी' जैसे महाकाव्य की रचना खड़ी बोली में की। उनकी भाषा का एक उदाहरण—

नील परिधान बीच सुकुमार,

खुल रहा मृदुल अधखुला अंग।

खिला हो ज्यों बिजली का फूल,

मेघ बन बीच गुलाबी रंग।।

—कामायनी, प्रसाद

छायावादोत्तर काव्य में प्रयुक्त खड़ी बोली

छायावाद उपरान्त प्रगतिवादी, प्रयोगवाद, नई कविता, नवगीत आदि का विकास हुआ। काव्य भाषा के रूप में खड़ी बोली अत्यन्त सक्षम एवं समर्थ होकर इन काव्य धाराओं में प्रयुक्त हुई। कविता में भाषा के स्तर पर ही नहीं अपितु अन्य सभी स्तरों पर नए प्रयोग हुए। अज्ञेय, मुक्ति बोध, माथुर, धर्मबीर भारती, नागार्जुन, सर्वेश्वर, त्रिलोचन, धूमिल, दुष्यन्त कुमार, केदारनाथ अग्रवाल, वीरेन्द्र मिश्र, नीरज आदि सैकड़ों से भी ज्यादा कवियों ने खड़ी बोली को प्रयुक्त किया।

काव्य भाषा के रूप में खड़ी बोली में नये बिम्ब, नये प्रतीक, नये शब्द, प्रयुक्त हो रहे हैं। आज खड़ी बोली काव्य भाषा के रूप में पूर्ण प्रतिष्ठित होकर निरन्तर विकास के सोपानों पर अग्रसर हो रही है।